# अरुणोदय

डॉ उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

प्रकाशक
शुक्तिका प्रकाशन
न्यू आलीपुर, कोलकाता-700063

Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'

ISBN : 978-93-84435-28-8

Published by : Sustika Prakashn
Unit 8, 5th floor, Phase-1
New alipur market complex,
Kolkata 700063

1st Edition - 2017
©All rights reserved to Authour

Printed By: Arena Art
Nabagram, Garia Station Road
Kolkata – 700152
Contact:-
arenaart2017@gmail.com

Price: Rs 20/-



# अनुक्रमणिका

| | |
|---|---|
| पर्यटन प्रस्ताव–स्वकथ्य | 14 |
| यात्रारम्भ | 24 |
| दार्जिलिंग की ओर | 29 |
| आवासीय वैभव | 37 |
| प्रथम सूर्यदय स्थल | 43 |
| भ्रमण जारी | 49 |
| सहयोगी मौसम | 56 |
| दोस्ती | 67 |
| चाय बागान आबास | 73 |
| सीखने का आनन्द | 78 |
| सुख देता मित्र-भाव | 48 |
| परिशिष्ट | 91 |

## अरुणोदय

हिमालय, हिमालय की छाया और उसका दैवीय आभास भारत के लिए वरदान है। कविकुलगुरु कालिदास ने कुमारसंभव में लिखा है, 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयोनाम नगाधिराजः ...' पर्वत को नग भी कहते हैं जिसका अर्थ है – न गच्छति इति नगः; अर्थात जो गति न करे उसे नग कहते हैं। हिमालय को कालिदास ने नगाधिराज कहा; जो स्वयं गति न करे लेकिन अपनी ओर चलकर आने के लिए बाध्य कर देता है; इस अर्थ में भी हिमालय नगाधिराज है। सम्पूर्ण संसार को दिव्यत्व प्रदान करने वाले देवताओं की उसे आत्मा बताया गया है। दैवीय गुणसम्पन्न महामानव जहाँ खिंचे चले आते हैं, भला सामान्य सांसारिक प्राणी खुद को कैसे रोक सकता है? नगाधिराज का सानिध्य



मानव को क्षुद्र स्वार्थपूर्ण पशुता-दानवीयता से ऊपर उठकर उदार दिव्यता प्रदान करता है।

अरुणोदय रूपी ग्रन्थपुष्प में साधक साहित्यकार अपनी दार्जिलिंग यात्रा का वर्णन करता है। पश्चिम बंगाल राज्यका अद्भुत स्थान दार्जिलिंग शिवालिक पर्वतमाला में लघु हिमालय में स्थित है।इस शिवालिक पर्वतमाला को बाह्य हिमालय के रूप में भी जाना जाता है। शिवालिक नाम से शिवजी का स्मरण हो आना तो स्वाभाविक है। भरापूरा शिव परिवार हिमालय की मनोहारी श्रेणियों में निरन्तर स्मरणशील है। साहित्यकार की यात्रा भी अपने परिवार जनों के साथ हुई जो इस रचना में स्पष्ट हुई है।

दार्जिलिंग शब्द की व्युत्पत्ति मुख्यतः तिब्बती भाषा के दो शब्दों से हुई है – दोर्जे+लिंग; दोर्जे = बज्र, लिंग = स्थान;

दार्जिलिंग का शाब्दिक अर्थ हुआ बज्रस्थल। ऐसा बज्रस्थल जहाँ जाकर साधकों की साधनाएं और प्रेमियों का प्रेम भी बज्र के समान मजबूत हो जाता है।

प्रश्न उठता है कि साहित्यकार साधक ने दार्जिलिंग को ही क्यों चुना? इसके उत्तर में इतना भर कहना पर्याप्त है कि भारत के इस 'उत्तर-स्थल' को 1999 में 'विश्व-धरोहर' घोषित करते समय सिर्फ़ इसकी नैसर्गिक सुषमा को दृष्टि में नहीं रखा गया; अपितु इसकी सार्वभौमिकता का भी ध्यान रखा गया। 1056 वर्ग किलोमीटर में फ़ैले इस नैसर्गिक वरदान का इतिहास भी उतना ही ऊबड़-खाबड़ है जितना इसकी पर्वतमालाएं! तत्कालीन सिक्किम राजतन्त्र का हिस्सा माना जाने वाला ये नगर ब्रिटिश भूटान, रूस, अफगानिस्तान आदि देशों की आँखों में भी



सपना बनकर चमक चुका हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने इस नगर को अपनी और अपनी इण्डियन नेशनल आर्मी की कर्मस्थली भी बनाया।

इस धरती पर बौद्ध भिक्षुओं ने महात्मा बुद्ध के दिव्य वचनों का उच्चार किया, तो बोस ने युद्ध का गुंज्जार। ये भूमि ईश साधकों के लिए नमन योग्य है तो राष्ट्र उपासकों के लिए भी प्रणम्य है। साहित्यकार एकतरफ इसके नैसर्गिक सौन्दर्य का वर्णन करता है तो दूसरी तरफ उसे राष्ट्र की वर्तमान विसंगतियां भी दृष्टिगत हो जाती है। भारत के प्रसिद्ध हिल स्टेशनों में दार्जिलिंग अन्यतम है, नेपाली, भूटानी, सिक्कमी और बंगाली संस्कृतियों का महत्तम संगम इस नगरी में हुआ है, जिसका दर्शन करके साहित्यकार का मन मयूर नाच उठा है।

दार्जिलिंग की सुरम्य पर्वतमालाओं में एक कंचनजंघा है, जो विश्व की सबसे ऊँची चोटियों में तीसरे स्थान पर है; और टाईगर हिल से साफ देखी जा सकती है। टाइगर हिल ऐसी श्रेणी है जो मरीचिमाली भुवनभास्कर सूर्य की अद्भुत छटा का अनुपम दृश्य प्रस्तुत करती है। यहाँ का सूर्योदय अत्यन्त मनोहारी होता है। सूर्य का शनैः शनैः निकलना और उसकी रश्मियों का विकीर्ण होना सबको मन्त्रमुग्ध सा कर देता है। यह अरुणिमा और ऐसा अनुपमेय दृश्य शब्दों से तो प्रकट होना असंभव सा ही प्रतीत होता है। साहित्यकार इन अद्भुत पलों में खुद को एक पुष्प पराग के रसास्वादन में उन्मत्त भ्रमर के समान प्रस्तुत करता है। मरीचिमाली की रश्मियां जब धवल  और अरुण का संगम करती हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति अपना श्रृँगार कर रही



हो। कंचन शब्द का अर्थ स्वर्ण होता है। सूर्य की प्रभा से प्रभाषित यह श्रेणी अपने कंचनजंघा नाम को सार्थक करती है। बौद्ध धर्म के शाक्य सम्प्रदाय का शाक्यमठ पर्यटकों को अहिंसा का संदेश देता है। महात्मा गाँधी के मित्र गुरु फ़ूजी द्वारा विश्वशान्ति की कामना से स्थापित पीस पैगोडा विश्वशान्ति के संदेश देते नहीं थकता। घूममठ, भूटियाबस्ती मठ आदि स्थल साहित्यकार के हृदय को शान्ति से ओतःप्रोत कर साहित्य की नई दिशा में नव संचार की दृष्टि देते हुए अनुभूत होती हैं।

टॉयट्रेन का सफर और उसका यान्त्रिक प्रयोग दर्शकों को स्तब्ध करता है। बारिश बौछार तूफ़ान और सर्द हवाओं के झोंकों का समय समय पर आनन्द प्रदान कराने वाले सर्द मौसम में भी कवि के हृदय में सूखती हिमालयीन नदियों

पर बने निर्मम बान्धों को देखकर धधक उठता है। प्रकृति विरोधी विकास कवि को विचलित करता है, और अपने दर्द को स्वीकारने में कवि तत्पर है; ऐसी विकास की धारा का कट्टर विरोध करता है। प्रवास में स्वच्छता देखकर मोदी का स्मरण और राजनैतिक चर्चा में योगी स्मरण होना समयानुकूल स्वाभाविक है। पुष्पों से भरी क्यारियां, फूलों के विहंगम नजारे, पर्वतीय सौन्दर्य, कालिदास के कुमारसंभव के पर्वतीय वर्णन का स्मरण करा देते है; ऐसी सरलता से साहित्यकार ने प्रकृति वर्णन इस ग्रन्थ प्रसून में किया है। विविध पशु पक्षियों से भरा दार्जिलिंग का दरबार साहित्यिक सौविध्य की अपार संभावनाएं समेटे हुए है, जो कवि की मार्मिक हृदय वेदिका पर आरूढ होने में जरा सा भी हिचकती नहीं। यात्रा में परिवारजनों का सहयोग



और संगिनी का सेवाभाव यहां प्रफुल्लित हो उठा है। साहित्य में काव्य की लघु इकाई हाईकू भी यहां सुषमा सौन्दर्य के साथ सुवासित हो उठी है।

दार्जिलिंग जाकर चाय बागानों का स्मरण न आए, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। अंग्रेज जब दार्जिलिंग में बसे तो उन्होंने अपने व्यापारिक लाभ के लिए जड़ी-बूटियों से भरे इस औषधीय भंडार को उजाड़ कर चाय की खेती कराना प्रारम्भ किया। 1839 में डॉक्टर कैम्पबेल ने यहाँ चाय की खेती प्रारम्भ कराई। आज यहाँ की दार्जिलिंग टी बनारस की पतली संकरी गलियों से लेकर लखनऊ की लम्बी चौड़ी सड़कों तक; एटा बदायूँ के गांवों के मिट्टी की दीवारों से लेकर मुम्बई की ऊँची इमारतों तक; हिमालय की उत्तुंग श्रेणी से लेकर कन्याकुमारी के उत्ताल तरंगों वाले

समुद्र तक चाही जाती है। साहित्यकार इन वादियों के वर्णन में हृदय लगा देता है। गृह आगमन के समय और ओलों की बारिश के साथ विदाई साहित्यकार की यात्रा को स्मरणीय बनाती है।

यात्रा वृत्तान्त एक ऐसी साहित्यिक विधा है जो दूर बैठे व्यक्ति को भी उसी आनन्द का अनुभव करा देती है, जैसा साहित्यकार को दृष्टिगत हुआ होता है। भारतवर्ष के हृदयस्पर्शी स्थलों का दिव्य दर्शन साहित्य के माध्यम से कराना, रचनाकारों ने इस कार्य को बहुत ही व्यवस्थित तरीके से किया है; वैसे ही श्री साधकजी ने भी अपनी दार्जिलिंग यात्रा को अपने अनूठे तरीके से पेश किया है। दार्जिलिंग यात्रा में यात्राप्रभात के अरुणोदय के साथ भारतीय राजनीति में नए अरुणोदय के दिव्य आलोक में रचित यह काव्य



मंजरी अपने अरुणोदय नाम को सार्थक करती है। परमपिता प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि श्रीसाधकजी दीर्घायु होते हुए साहित्यश्री का निरन्तर संवर्धन करते रहें। ये साहित्य उनके निरन्तर अभ्युदय का साधन बने।

अनुज कुमार शर्मा "रामानुज"
भंगरवट; पोस्ट – रसूलाबाद, जिला उन्नाव
(उत्तर प्रदेश)

## पर्यटन प्रस्ताव–स्वकथ्य

सिर्फ़ कोई नई जगह देखने या हिल-स्टेशन का आनन्द मात्र नहीं, बल्कि मानव के जागृति-क्रम में महत्वपूर्ण सहयोगी उपक्रम बनता है।

दार्जिलिंग शायद 5-6 बार हो आया हूँ, अतः इस ट्रिप का प्रस्ताव रोमांचक तो नहीं था, किन्तु बच्चों के साथ अबाध चार-पांच दिन बिताने का अवसर कैसे छोड़ देता?

स्वीकृति भाव में गया, अपनी स्वीकृतियों के दायरे को सप्रयत्न बढाया और अपेक्षा से अधिक पाया। जो सोचकर निकला, वह कुछ भी न हुआ; सबकुछ अकल्पित हुआ। एक दो उदाहरण यहीं बरबस निकल आने को मचल रहे हैं –

एक – क्या गहराई है इन आँखों में। इतना प्रेम, इतनी करुणा! सिर्फ़ अपनी दादीजी की आँखों में ही पाई थी; अब तो वह भी भूली-बिसरी बात हो गई है। ...



और मैं तो यहाँ आना ही नहीं चाहता था, तो किस प्रेरणा से आ गया? किसने बलात भेज दिया, कि जैसे मेरे लिए ही इन्तजार रत हैं ये आँखें। ...

इनको कुछ पल देखना, इनमें झाँक भर लेना; हिला गया मुझे अन्तर तक। ये तो पकड़ ही ले रही हैं मुझे! ये तो निगल ही जा रही है मुझे। अपने आप को बचाना कठिन लगा, तो जोर लगाकर आँखों से नजरें फ़ैलकर झुर्रियों भरे मैले-काले चेहरे पर टिकी। अरे, यह तो स्वयं मेरा ही चेहरा है... मेरी ही आँखें... क्या मैं खुद को ही देख रहा हूँ दर्पण में? क्या मैं खुद से ही इतना घबरा रहा हूँ? ... यह कैसे हो सकता है? मैं कहाँ इतना सुन्दर? इतनी दिव्यता... इतनी मासूमियत ... इतनी गहराई मुझमें भला कैसे आ सकती है? मैं तो क्षुद्र वासनाओं का पुतला, अन्दर-बाहर दोगला; खुद की कमियों को छुपाता, कृत्रिम महानता को ओढता एक ढोंगी... ... ना। यह मैं नहीं हो सकता।

काल और अवकाश लोप हुए; आँखें बन्द हुई। भीतर फ़िर वही चमकती दिव्य आँखें! घबराकर खोली आँखें तो सामने वही आँखें!? … … इनसे बचने का, बचकर भाग जाने का कोई मार्ग ही नहीं? कोई उपाय न बचा तो फ़िर वहीं टिकाया अपने अहँकार को, कि आखिर यह मामला क्या है? इससे आगे सोच-विचार-कल्पना-जल्पना कुछ चला ही नहीं। स्वस्थ होकर आँखें देखी, मुस्कुराता चेहरा देखा; आँखों सहित चेहरे की झुर्रियों में असीम प्यार भरा आमन्त्रण देखा; उस चार-फ़ुटिया जर्जर नारी-तन में छलछलाता जीवन देखा; वर्षों-सदियों-युगों-जन्मों का संचित तप देखा; सत्यं शिवं सुन्दरम का शाश्वत प्रवाह देखा; यशस्विनी भारतमाता की झिलमिलाति आशा-आकांक्षाएं देखी; धरतीमाता की मंगलमयी छवि देखी … … … हाँ, मैंने देखा यह अद्भुत नजारा।



और कुछ ही क्षण पूर्व तो मैं माही-धृति को पानी से बाहर आने का आदेश दे रहा था। सुप्रिया को नदी बीच चिकने-फ़िसलनभरे पत्थरों पर आगे बढने से रोकने का असफ़ल प्रयत्न कर रहा था। चाहता था कि अमिता अपने 'कम्फ़र्ट जोन' का दामन थामे उस खतरे की तरफ़ आगे न बढ जाए। श्रेयाँश की एकाग्रतापूर्वक फ़ोटोग्राफ़ी का आनन्द मुझे मिलेगा कि नहीं, इस आशंका से दुखी था। स्नेह का इन सबसे हटकर अलग बैठे अपने कल्याण-आश्रम या अन्य कार्य की ऊधेड़बुन लिए विशिष्ट भंगिमा की तरफ़ सप्रयत्न उपेक्षा दिखा रहा था। राजू और अन्य ड्राईवर को जनरल-मेनेजर –सुत माही की सुरक्षा में व्यग्र देख रहा था। किनारे पड़े चट्टानी पत्थरों की सुन्दरता का आनन्द ले रहा था; धीमे बहते पानी की शीतलता को अपने पांव दुलराते महसूस कर रहा था; सूखती नदी और हिमालयीन नदियों पर बने बीसियों बाँधों के निर्मम समीकरण में उलझा था;

उसपार सड़क किनारे के बड़े-बड़े वृक्षों के अल्पकाल में कट जाने की कल्पना से व्यथित था; पहाड़ी जीवनशैली पर नाना दिशाओं से इस 'विनाशी-विकास' के हथौड़े पड़ते महसूस कर रहा था... ... ...

इस अभेद्य चक्रव्यूह के भीतर फ़ंसा अभिमन्यु इसे भेदकर कैसे बाहर आ पाया अपने आपसे मिलने? किसके करुणा-कृपा हस्त थामे हैं मुझे? क्या चाहते हैं मुझसे? क्या प्रयोजन है इस सारे आयोजन का?

यह आलेख उस दृश्य का हिस्सा नहीं है बल्कि अब उसकी आंकलन-समीक्षा है। जैसे यह साधक गीता-उपनिषदों की समीक्षाएं लिखने का बचकाना सा प्रयत्न करता रहता है... व्यर्थ प्रयत्न। इसी व्यर्थ प्रयत्न में वे आँखें फ़िरसे खो जाती हैं... ...

दो – बाबूजी का फ़रवाला कोट। बताया करते थे बाबूजी कि दार्जिलिंग से ही शायद सौ रुपए में खरीदा था। बहुत शौकीन थे बाबूजी। यह कोट पहने



घोड़े पर चढे बाबूजी की फ़ोटो को देखकर सरोज ने कई बार उनको 'धर्मेन्द्र' कहा है। शायद आठ-दस वर्ष की उम्र से ही बाबूजी की यह फ्रेमजड़ी फ़ोटो देखता आ रहा हूँ मैं। अर्थात यह कोट बाबूजी के शरीर पर साठ साल पूर्व शोभायमान हुआ!

बाबूजी द्वारा व्यवहृत और सहेजी हुई चन्द वस्तुओं में अन्यतम है यह कोट। इसे साल-दर-साल संभालकर रखना एक तप से कम नहीं। साधक की कई महत्वपूर्ण डायरियां खो गई, अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेजों का अता-पता तक नहीं रहा; मगर यह कोट बच गया, सुरक्षित रह गया।

दार्जिलिंग के शीतल परिवेश में शायद यह कोट उपयोगी हो जाए; इस भाव से साथ ले लिया। छोटी सी अटैची में आधा स्थान तो इस कोट ने लिया, शेष आधे में पाँच दिन के वस्त्र। कुछ वस्त्र व सामान कटौति में छोड़े ... और बहुत काम आया यह कोट। लगभग साठ-सत्तर वर्षों तक प्रयत्नपूर्वक

सम्भालकर रखा कोट आज अपार सुख और खुशियां दे रहा है। साधक को पहना देखा तो इसकी चमक, सुहाना रंग और सर्दी रोकने की क्षमता देखकर सह-धर्मिणि ने अपने लिए मांग लिया। खुशी- खुशी साधक ने कोट उतारा ही था कि बिटिया सुप्रिया कोट की तारीफ़ करने लगी; अगली ट्रिप में उसके बदन पर शोभा बना।

साठ साल से एकसमान चमक बनी हुई है; जैसे किसी शाश्वत मानवीय मूल्य की बात हो रही हो। अब इस कोट में क्या सांस्कृतिक मूल्य थोपे जा सकते हैं? आजकल तो फ़र का कोट पहनना फ़ेशन से भी बाहर हुआ, और मेनकाजी के कानूनोंनुसार शायद अपराध भी हो। जैसे आजकल किसी सम्भ्रान्त महिला को भरी महफ़िल में 'मां' का सम्बोधन ही लज्जास्पद या अपमानजनक लग जाता है; वैसा ही इस कोट के गरिमागान के साथ हो सकता है।



और एक बात। जीवित रहते बाबूजी की अनेक बातें और उनकी आदतों से स्वयं साधक को आपत्ति या परेशानी हो जाती थी। भले ही उनके उपकारों को जाने-अनजाने अपनी-अपनी सुविधानुसार जी रहे हैं हम सब। उनका अपने लिए इतना आलीशान कोट खरीदना अपने आपमें एक आश्चर्य है क्योंकि वे स्वयं को हमेशा कम खर्चपूर्वक कष्ट में ही रखते रहे; सन्तानों के लिए किया अमानवीय परिश्रम। संभवतः साधक ने उनके इसी स्वभाव को देखकर उनको जनक रूप में चुना; साधक को प्राप्त समस्त सुविधाओं पर उनकी छाप विद्यमान है। प्रणाम बाबूजी।

तीन - ताप्ती नदी को निश्चल देखते ही बांधों के नाम गाली निकल आई। तल तक चुल्लू-चुलू पानी में किसी भी प्रजाति की मछली कैसे मिलेगी? सतत बहते पानी की जीवन्त ताजगी बांधों से रुके पानी में कैसे समायेगी? बांध-निर्माण प्रक्रिया में कमजोर हो

गए पहाड़ और नष्ट होते जा रहे जंगलों का पर्यावरणीय दुष्प्रभाव कैसे रोका जाएगा? नैसर्गिक चक्र को बाधित करने के पाप का दुष्फ़ल पूरी मानव जाति को भुगतना पड़ रहा है, किन्तु इसके लिए जिम्मेदार सम्भ्रान्त कहे जाने वाला वर्ग अपने दुष्कर्म को स्वीकारता तक नहीं; बल्कि वही पर्यावरण बचाने का अग्रिम दस्ता होने का दम भरते हैं। पैसे ने मन दूषित कर रखा है, अब पर्यावरण के प्रदूषण को कौन कहाँ तक रोकेगा? तामी के दर्द को सुनना-समझना अभी तो दूर की कौड़ी ही लगता है। चार – सड़क पर दो कारें आमने-सामने अटक जाएं, तो दोनों ड्राईवरों के तेवर देखने लायक होते हैं। कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं होता और पीछे दोनों तरफ़ कारों का काफ़िला पूरी सड़क को जाम कर देता है। बड़े शहरों के चौड़े रास्तों पर मानवों की तंगदिली परस्पर तल्खी, परेशानी और झगड़ा बढाती है। डाईवरों को अपने मालिक के धन, पद,



यश का अहंकार अपने छोटेपन की ग्रन्थि से मिलकर अबूझ सा गुमान पैदा कर देता है। यही ग्रन्थियां अनावश्यक ही शहरी जीवन को नर्क बना देती है। इधर दार्जिलिंग की संकरी सी सड़क पर यही घटना ड्राइवर, मालिक सभी के होठों पर मीठी मुस्कान सहित दिल खुश करती है; यथायोग्य आकलनपूर्वक कोई एक गाड़ी पीछे करके दूसरे को निकल जाने दिया जाता है।

ऐसा ही सहज सहयोग सभी सैलानियों को अनायास मिलता है; आमजन मुस्कुराकर हर प्रश्न का सही उत्तर देते हैं।

छोटी जगह, बड़ा दिल।

अभाव नहीं दिखता, सरल स्वभाव दिखता है।

पैसा नहीं, प्यार जीतता है।

– साधक

## यात्रारम्भ

सुपुत्र का प्रस्ताव है, पाँच दिन दार्जिलिंग में सबके साथ छुट्टी मनाने का। दो दिन इन्तजार कराके हाँ कर दी। पोती धृति की स्कूल का गणित मिलाकर शुक्रवार 17 मार्च को रात्रि-ट्रेन से सभी छः परिजन न्यू जलपाईगुड़ी के लिए निकले।

एकबार पूरी तरह छुट्टी मनाने के भाव से लेपटोप साथ न रखने का विचार बना, किन्तु नित्य के अभ्यासवश लेपटोप साथ चिपका रहा; सुफ़ल हुआ। दूसरे दिन प्रातः चार बजे जागा। एक घंटा शरीर-चर्या में लगाकर अपने केबिन में लौटा, अभी सब जन नींद में सोए हैं; लाईट जलाना उचित नहीं है। अत्यल्प सहज उपलब्ध रोशनी में ही दो सीटों के बीच अपनी सूटकेस पर बैठकर लेपटोप खोला और काम शुरु हो गया। जो दिखता गया, सो लिखता गया; काव्य आगे बढता गया। चलती गाड़ी में बनी ये रचनाएं आपके मन का दर्पण बने, तो लेखन सार्थक है; साधक तो स्वान्तः सुखाय लिखता है।



शुभ प्रभात
सूर्योदय हो रहा
अद्भुत दृश्य।

पल-क्षण में
बदलता नजारा
चलती गाड़ी।

बहती वायु
परिवर्तित करे
दृश्यावलियां।

भोर की वेला
गन्ध-स्पर्श-रस को
नयापन दे।

अरुणिम है
आदित्य का आनन
लालिमायुक्त।

सांसों में घुले
सुबह की महक
रोमाँचक है।

लहलहाते
पेड़-पौधे-खेतियां
प्रसन्न दिखें।

एसी न होता
शुद्ध हवा मिलती
ताजगी देती।

प्राणायाम हो
प्रातः की ताजगी में
लाभदायक।

वंचित किया
प्राकृतिक सुख से
पैसे की माया।



सामान्य जन
ताजी हवा पाएगा
फ़ंसा अमीर।

खुला गगन
मस्त पंख फैलाए
उड़ते पंछी।

कलाबाजियां
आकाश में चलती
अठखेलियां।

खेल रहा है
जर्रा-जर्रा सृष्टि का
नृत्य-लय में।

बादल खेले
बाल-रवि के साथ
आँख-मिचौनी।

पत्ते फूलों से
स्नेह-संवाद-रत
बतिया रहे।

निश्चिन्त सृष्टि
दुःख से बेखबर
कहाँ मानव?

परिवेश में
अपरूप सौन्दर्य
मन-भावन।

उत्सवित है
तन-मन-मष्तिस्क
मंगल-यात्रा।

सुख से शुरु
सुख पर शेष हो
शुभ कामना।



## दार्जिलिंग की ओर

लगभग एक घंटा विलम्ब से न्यू जलपाईगुड़ी उतरे। नन्हीं धृति ने उत्साहपूर्वक अपनी बक्सा थाम ली, पहियों पर सहजता से खींच लिया तो सभी अपनी-अपनी अटैची थामे आगे बढ गए; बिचारे कुली टापते रह गए। सियालदह स्टेशन पर चढते समय कुली से हुई झिक-झिक यहां न झेलनी पड़ी, धृति ने बचा लिया; स्वावलम्बन का सुख दिया।

कुलियों के साथ सामान ढोने के मेहनताने को लेकर होता मोलभाव पर्यटन का मजा किरकिरा कर देता है। देश में एकाध स्टेशन ही ऐसा मिला जहाँ कुली के साथ प्रसन्नतापूर्वक मामला निपटा। ऐसे में अपनी तरफ़ से बीस-पचास रुपए बख्शीश देने का

सुख मिलता है। सीधी सी बात है कि आनन्द अनायास फ़ैलकर बाहर आता है, स्वयं ही बट जाता है; जबकि जबरन वसूली अन्तर की सद्भावना का सत्यानाश कर देती है। साधक का सौभाग्य है कि कभी मांगना नहीं पड़ा, छीनने की बात तो कभी जेहन में भी न आई। देने का सुख पाया। रिश्तों जटिल समीकरणों में 'देने-बांटने' का सुख मिलना बन्द हुआ, तभी असन्तोष-उदासी के लिए अवकाश बना है। शिशु की सहज खुशियों का राज भी यही है कि वह अपना आनन्द बेशर्त-निर्बाध बाँट लेता है। देना ही देव-भाव, देना ही दिव्यता का सूत्र।

कुलियों की अपनी कठिनाई है। उन्होंने बख्शीस को भी अपना हक मान लिया तो



परस्पर स्वार्थ टकराए और घर्षण से गर्मी पैदा हो ही जाती है। 'बख्शीश' का दुरुपयोग हुआ, तो कुली-गण बख्शीश-मेहनताने से वंचित ही होते जा रहे हैं। 'यात्री-कुली-रिश्ते' के दुरुपयोग से अब यह रिश्ता ही खतम होने के कगार पर हैं।

जो जिस वस्तु का दुरुपयोग करता है, वह उस वस्तु से वंचित हो जाता है। सदुपयोग मानवीयता है, दुरुपयोग दानवीयता।

'विद्यार्थी-गुरु' रिश्ते का दुरुपयोग हुआ; अब कहाँ हैं गुरु और शिष्य?

'सास-बहू' रिश्ते का दुरुपयोग हुआ; बदल गया रिश्ते का स्वरूप।

भाई-बहन, माता-पिता-सन्तान आदि रिश्ते परस्परता में दुरुपयोग के कारण बोझिल हुए, अब मिटने के कगार पर हैं।
परिवार इकाई में रिश्तों का दुरुपयोग परिवारों के स्वरूप को ही संक्षिप्त करते जा रहे हैं।

बोलेरो गाड़ी तैयार खड़ी थी। ड्राईवर गोविन्द ने आदर-प्रेम सहित सामान रखा, और बिना समय नष्ट किए दार्जिलिंग की तरफ़ यात्रा शुरु हुई।



उतरते ही
दार्जिलिन्ग के लिए
निकल पड़े।

समूचे रास्ते
सर्पाकार चढाई
आनन्ददायी।

दुर्गम रास्ता
चढाई के समय
मिला आनन्द।

बीहड़ वन
रोमाँचक पहाड़ी
मन-मोहक।

रोम उठाती
शीतल सुहानी है
मन्द बयार।

यात्रा से जुड़े
अपने संस्मरण
आनन्ददायी।

अपनी यादें
सुनाना अच्छा लगा
सुने न सुने।

संस्मरणों का
अशेष चला दौर
आई मंजिल।

उल्टी-चक्कर
किसी को भी न आया
सुहानी यात्रा।

सुन्दर देश
सुहाना पर्यटन
संजीवनी दे।



पुष्पों से लंदे
लम्बे-ऊँचे हैं वृक्ष
मन-मोहक।

उन्मुक्त पंछी
झुरमुटों के बीच
चहचहाते।

अच्छी सड़क
सरपट गाड़ी में
सुखद यात्रा।

कृतज्ञ मन
सही व्यवस्था-तन्त्र
आह्लादकारी।

सही तन्त्र ने
सबको खुशियां दी
धन्यवाद है।

सुरक्षा-कर्मी
सड़क-मरम्मती
काम में व्यस्त।

चुकते शब्द
हार जाती कल्पना
ऐसा आनन्द।

हिमालयीन
पर्वत श्रृँखलाएं
शिव-जटाएं।

औषधि भरी
जल, अनिल, रज
मन हर्षाए।

मन से तन
सहज स्वास्थ्यकारी
पर्यावरण।



## आवासीय वैभव

सुखद राहें हों तो मंज़िल भी सुखद ही होती है। पता नहीं श्रमण-मुनियों और तपस्वियों ने मुक्ति पाने के लिए कष्टकर मार्ग कैसे चुना? साधक ने तो सीधा-सादा सूत्र पा लिया कि जिन राहों पर चलते हुए कष्ट और दुःख हों, वह राह सुखदायी मंजिल न दिलाएगी?

न्यू जलपाईगुड़ी से दार्जिलिंग चार घंटे में आनन्दपूर्वक पहुँचे। बेटे श्रेयाँश को किसी अदालती कार्य से रुकना पड़ा, रात गए तक आ जाएगा। मेफ़ेयर रिसॉर्ट में दो दिन की बुकिंग है। दरवाजे पर ही आलीशान सेवा-टहल शुरु हो गई, गाड़ी से सामान प्रशिक्षित कर्मचारियों ने ही पहले रिसेप्शन और चाय-पान के बाद सूट तक पहुँचाए। दार्जिलिंग-टी

ने यात्रा की सारी थकान हर ली, इस विशेष दो कमरों से जुड़ी बैठक वाली सूट ने बादशाहत का अहसास दिया। किसी मित्र का वाट्सेप पर भेजा यह संदेश स्मरण आया – "माता-पिता ने तुमको शहजादों सा पाला है, अब उन्हें बादशाहों सा सम्भालो..." यह अलग बात है कि साधक ने यह दावा कभी नहीं किया... शहजादों सा तो न पाला श्रेयाँश को... पर उसने तो बादशाहत दे ही दी है ...



राजशाही है
मेफ्रेयर रिसॉर्ट
हर कोने से।

उपलब्ध हैं
सबसे ऊँचा स्थल
सभी पॉइंट्स।

पाँच सितारा
सुविधाओं से युक्त
मन-मोहक।

स्नानोपरान्त
गर्म-ताजा भोजन
तृप्ति-दायक।

टीवी-विश्राम
देश का तापमान
योगी की चर्चा।

टेलीविजन
कुर्सियां व टेबल
आलीशान हैं।

बीचों-बीच में
कोयले का अलाव
शाही गर्मी दे।

साज-सज्जा में
राजशाही रौनक
कोने-कोने में।

सेवाभावी हैं
रिसॉर्ट कर्मचारी
शिक्षण-प्राप्त।

साफ-सफाई
दर्पणवत् त्वरित
मोदीयाना है।



चाय पिलाई
स्नेह ने बनाकर
आनन्द आया।

शाम सुहानी
पुराने फ़िल्मी गीत
अलाव संग।

सधी गायकी
सामने बैठकर
सुनते शाह।

फ़िर डिनर
बूफ़े सिस्टम वाला
फ्रुट-ज्यूस भी।

पांच स्तर का
स्वाद ताजगी भरा
मस्त डिनर।

चुनावी चर्चा
धड़कन देश की
नित पा लेता।

योगी-चर्चाएं
करे टीवी चैनल्स
जायजा लिया।

पलंग पर
न सो सके साधक
बिछा बिस्तर।

गर्म अलाव
हीटर भी चलता
बिस्तर पास।

लुढकते ही
निद्रा महारानी का
सुहाना संग।



## प्रथम सूर्योदय स्थल

सुप्रिया ने प्रातः साढे तीन बजे सबको जगाया। अपने-अपने ढंग से नित्यकर्म निपटाकर टाईगर हिल्स सनराइज पॉइंट पर पहुँचे। पहले ही बता दिया गया था कि गाड़ियों से सड़क जाम होनी है; तो पॉइंट से काफ़ी पहले उतरकर दुसाध्य चढ़ाई चढ़नी पड़ी। भीड़-भाड़ से बचाते हुए पूरा सहारा दिया बिटिया ने, फ़िर बेटे ने। पूरी देर बुढाते शरीर की लाचारी पर लज्जाबोध होता रहा। अभी तो साधक के कई वरिष्ठ जन आसानी से बिना सहारे चल-फ़िर लेते हैं; वर्षों योगपूर्वक साधा हुआ शरीर अनेक बीमारियों को झेलते अब बेबस हुआ। यह भी लगा कि

मुझे नहीं आना चाहिए था। बच्चों को भलीप्रकार पता था, फ़िर भी मुझे साथ लेकर आए! स्नेह सहित तीनों कृशकाय हैं, तब भी साधक का भारी शरीर थामकर चढाई की, वर्तमान श्रवणकुमार!

कार से उतरने से पूर्व ही गर्मा-गरम कॉफ़ी लिए पहाड़ी सुन्दरियां सामने आईं। साठ वर्ष से लेकर 15-16 वर्षीय किशोरियां भरपूर मुस्कुराहट के साथ ... दो-तीन बेटियों से बात की... कॉफ़ी न पीने पर किसी ने पैसे की भेंट न स्वीकारी; सहज स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा है! इस सुन्दरता और स्वाभिमान के दर्शन बार-बार हुए। अद्भुत गौरवपूर्ण आनन्द का दुर्लभ अवसर बना यह पर्यटन।



दूसरी प्रातः
टाईगर पॉईंट
छः बजे पूर्व।

कारों से जाम
अफ़रा-तफ़री में
चढाई-कष्ट।

गर्म कॉफ़ी ली
पहाड़ी सुन्दरी की
मुस्कान-युक्त।

सहारा पाया
बिटिया सुप्रिया से
श्रेयाँश संग।

चहकती है
धृति की चंचलता
हरे थकान।

प्रकृति-रंग
सूर्योदय के साथ
नाचताकाश।

चारों तरफ़
न्यारी कलाकृतियाँ
अद्भुत रंग।

कोटि हाथों से
चल रही कूचियाँ
रंग उकेरे।

बदलते हैं
क्षणांश में नजारे
कैसे समेटें?

चुकते शब्द
हार जाती कल्पना
ऐसा आनन्द।



कैसे समाए
दैहिक-चक्षुओं में
आत्मानुभूति?

इस पार्थ को
चाहिए दिव्य दृष्टि
वर्तमान में।

सृष्टि-दर्शन
अनन्तायामी दृश्य
नूतन क्षण।

बेबस शब्द
चुकती प्रार्थनाएं
हर दिशा से।

महारास है
नित-नव रोमांस
सृष्टि-विलास।

रंगों के संग
सांसों को महकाते
रसायन हैं।

न भरा मन
चढ गया सूरज
बदला दृश्य।

यही नजारे
दोहराते राह में
हर्षित-मन।

लौटे रिसॉर्ट
ताजा-गरम नाश्ता
राजसी सेवा।

विश्राम पाया
टीवी संग संवाद
योगी-चुनाव।



## भ्रमण जारी

नाश्ता-विश्राम के बाद लगभग ग्यारह बजे पुनः तैयार; भ्रमण जारी है। रोप वे का आनन्द लेने गए तो स्थल पर पहुँचकर पता चला कि आज बन्द है। देख-रेख, मरम्मत और सुरक्षित रख-रखाव हित यह आवश्यक अवकाश माना जाए। हम सब भी तो इसी अवकाश पर हैं, रिश्तों में आती दरारों को भरने हेतु यह अवकाश अनजाने अपना काम करता है। जैसे रात्रि विश्राम में शरीर के अंग-प्रत्यंग में नई ऊर्जा भर जाती है, जैसे सृष्टि-रचना हर बदलते मौसम, हर ऋतु, हर माह-पक्ष और दिवस के साथ नई दिखाई देती है; वैसे ही निद्रा-कालीन विश्राम में घटती भौतिक-रासायनिक प्रक्रियायें स्वस्थ बनाती हैं।

सहजतापूर्वक गाड़ी को घुमाकर चिड़ियाघर आ गए।

मेरे मन-मस्तिष्क में कोलकाता का चिड़ियाघर विशालतम और सर्व-समावेशी रहा; अपने तीनों बच्चों को हर वर्षान्त के दिनों में चिड़ियाघर घुमाने ले जाता था। नानी-बाड़ी, मौसी-मौसा परिवार के साथ सभी बच्चों को कई बार पिकनिक भी करवाई है। वे सारी मीठी स्मृतियां साथ लिए सुप्रिया के नैतृत्व में अन्दर घुसे।

सबसे पहले परिसर की स्वच्छता ने मन मोहा। कोलकाता सहित देश के अन्यान्य चिड़ियाघरों में राहों में बिखरे मूंगफ़ली के छिलके, कागज-प्लास्टिक के ठोंगे और बची जूठन के अंश एकसाथ चित्रित हो गए।



विस्फ़ारित आँखों से चारों तरफ़ देखा, स्वच्छता ऐसी कि बिना दरी के सीधे सड़क पर लोट-पोट हो जाएं। मूड़ी-मूंगफ़ली-आईसक्रीम सब गेट के बाहर ही निपटाने पड़े हैं। अन्दर तो किसी चाय-कॉफ़ी का इन्तजाम भी नहीं है। सुन्दर हिमालयीन पशु-पक्षियों को देखना, उनकि मनभर फ़ोटोग्राफ़ी करना और पहाड़ी उतार-चढाव का आनन्द लेना।

चिड़ियाघर
दुर्लभ लाल पाण्डा
रंगीले पक्षी।

साफ-सफाई।
शौचालय तक भी
वाह कमाल!

चटख लाल
अद्भुत नजाकती
गुड़ाल पुष्प।

ऊँचे पेड़ से
झरते लहराते
स्वागत करें।

सुन्दरता का
जर्रा-जर्रा बनता
उदार दाता।



परिलक्षित
स्वानन-सुन्दरता
कृपा की साक्षी।

स्वावलम्बन
मानवता सहज,
श्रमाधारित।

सांसों में घुली
पहाड़ी सुन्दरता
महकाती है।

विशालकाय
बंगाल टाईगर
विश्रामरत।

लंगूर जोड़ा
सन्तान को लपेटे
आलिंगन में।

सर्दी न लगे
बन्दर बचाते हैं
नन्हें शिशु को।

अनेक नए
पशु-पक्षी मौजूद
आनन्ददायी।

अलग लगा
यह चिड़ियाघर
दर्शनीय है।

बौद्ध मोनेस्टी
सांस्कृतिक वैभव
गौरवाभाष।

अभूतपूर्व
सुखद अनुभूति
इस दौरे की।



मन-मोहक
फ़ुटपाथी बार्गेन
अधिक खुशी।

नुक्कड़-कॉफ़ी
सुख-सन्तोषकारी
औषधिवत।

भोजनालय
बहुत घूम कर
देर से मिला।

भोजनान्तर
जलता अलाव है
निजी कक्ष में।

याद दिलाता
लाडनूं की सर्दियां
जलतालाव।

## *सहयोगी मौसम*

यह सिर्फ़ दैहिक-भौतिक सुन्दरता की बात नहीं है। कुल तीन दिनों में पहाड़ी संस्कृति, पवित्र आध्यात्मिक परम्परा, सादे-सजीले रहन-सहन और मानवीय सहयोग के अनेक प्रसंग सामने आए। भारत की सुन्दरता और महानता का एक पुराना गीत बार-बार स्मरण आया –

है देह विश्व, आत्मा है भारतमाता।
सृष्टि प्रलय पर्यन्त अमर यह नाता।

अपनी भावनाएं कार में चलते समय परिजनों से सहर्ष बाँटी। यात्रा अधिक सरस बनी।



यात्रा के दौरान मौसम ने मन-मोहक रंग बिखेरे, अद्भुत साथ दिया। तीन दिनों में हमारी समय-सारणि को निर्बाध रखते हुए वर्षा, धूप, ओले और सर्दी आते-जाते रहे। दो रातें-तीन दिन कृतज्ञ भाव से आनन्द लेते रहे हम। मौसम की मस्ती में योगी-मोदी चर्चा ने महक भरी; आनन्दम।

पुनः भ्रमण
जन-गण-मन में
योगी-मोदी है।

आज ही मिला
सात दिनों के बाद
ये सूर्योदय।

कल बारिश
आज खिली है धूप
सौभाग्यवश।

हर दिशा से
दूर तक सुन्दर
दृश्यावलियां।

पर्यटन का
दार्जिलिंग लगता
आदर्श स्थल।



साक्षी देते हैं
पेड़-पुष्प-पौधे भी
खिलखिलाते।

घर-घर में
रंग-बिरंगे फूल
सजे गमले।

सही स्वच्छता
राह से घर तक
यथायोग्य है।

हर मोड़ में
रखे कचरेदान
पाठ पढाते।

सहयोगी है
जन-गण का मन
सहजता से।

संकरे रास्ते
उदारतापूर्वक
ईष्ट मिलाते।

तीसरे दिन
पीस पगौडा-शान्ति
अहिंसक है।

बौद्ध-संस्कृति
हर कदम पर
मूर्तिमन्त है।

सामान्य चर्या
कष्ट-साध्य जीवन
हर ऋतु में।

हर ढंग में
सहयोगी मौसम
चारों नजारे।



उतरते ही
हल्की बूंदाबान्दी में
भोजन-सुख।

दूसरी प्रातः
चमकता आकाश
उमंग भरे।

अलाव-सुख
शीतल दुपहरी
पूर्ण विश्रान्ति।

लौटती वेला
बरसते ओलों का
विदाई-गान।

तीन दिनों में
चारों रंग दिखाए
प्रकृति मां ने।

## सहयोगी मौसम

दार्जिलिंग से मालबाजार। चि श्रेयाँश के एक आत्मीय मित्र श्री अशोक गर्ग ने अपने चाय-बागान में दो दिन बिताने का प्रस्ताव दिया। हम दोनों पिता-पुत्र इस प्रस्ताव पर अपने-अपने प्रयोजन सहित सहमत हुए। श्रेयाँश अपने व्यवसायिक महत्वाकांक्षा से एक और टी-गार्डन सपत्नीक देख आया। इस कारण मालबाजार पहुँचने में चार घंटा विलम्ब हुआ; भोजन की अनियमितता उल्टी-चक्कर आदि का कारण बना। राह की सुन्दरता का आनन्द अकेले साधक के हिस्से में आया; सहधर्मिणी स्नेहलता चारों बच्चों को सम्भालती रही।



स्नेह के साथ
चौरास्ता पर चर्चा
स्मरणीय है।

कंचनजंघा
विहंगम पॉईंट
निकटतम।

उत्तमावास
परिजनों का साथ
भ्रमणसुख।

मोबाईल से
ग्रुप-एकल फ़ोटो
फ़ेसबुकार्थ।

वापसी यात्रा
इन्तजार रत है
चाय-बागान।

संकुल-बस्ती
भयकारी लगती
पहाड़ों बीच।

दीवार पर
टंगी तसवीरों से
लटके घर।

वृक्ष-विहीन
दुर्बल पहाड़ियां
भरभराए।

बारिश संग
सरिता में घुलते
प्रिय पहाड़।

घटते वन
रिसते हैं पहाड़
लुटे जीवन।



जंगली जन्तु
वनीय परिवेश
मंगलकारी।

दानवी लिप्सा
आत्मघाती बनती
हाय मानव।

घुमावदार
पहाड़ी रास्तों पर
कष्टीली यात्रा।

श्रमाधिक्य से
भूल खानपान से
उल्टी-चक्कर।

धृति सुप्रिया
अमिता श्रेयाँश भी
राम बोलते।

रुके-थमते
उल्टियाते थकते
घर पा गए।

स्नेह का धैर्य
सम्बल बन गया
विषमता में।

माल बाजार
राम राम करते
पहुँच गए।

कुछ मिन्टों में
आवास-स्थल मिला
आश्वस्तिदायी।

स्वागत हुआ
शौच-स्नानपूर्वक
गर्म भोजन।



## दोस्ती

माल बाजार में चाय-बागानों के साथ जुड़ा कारखाना और आवासीय बंगला! सबकुछ नजरों के निकट। सीखने का सुनहरा अवसर अनायास मिल गया। सिखाने को उत्सुक हैं मेनेजर चक्रवर्ती और उनके सहायक राजू शर्मा। जनरल मेनेजर श्री रुपेन्द्र के साथ चाय पर हुई संक्षिप्त चर्चा ने सम्बन्धों का एक नया अध्याय खोला है, जिसमें उनका सात वर्षीय बेटा माही धृति के साथ मिलकर नए रंग भर रहा है। माही के दो-तीन मन भावन दोस्त और हैं; दो पालतू कुत्ते जैक और सिल्क तथा मिट्ठू तोता। माही के नृत्यों ने सबका मन मोहा। इस शिशु वयमें असाधारण समझदारी भरा व्यवहार 'होनहार बिरवान के होत चीकने

पात' कहावत की याद दिलाता है। यहाँ बहुत आदर-सत्कार भरा व्यवहार मिला। एक रात-दो दिन का प्रशिक्षण और आदर स्मरण रहेगा।

शाम की चाय के समय बारिश एक अलग ही मजा देती है। ऐसे में अन्य कुछ होना नहीं था, प्रत्युत्पन्नमति सुप्रिया ने सबको साथ बिठाकर ताश का एक नया खेल खिलाया – "जजमेण्ट"; मजा दुगुना हुआ।



बूंदा-बांदी में
ताश-खेल-आनन्द
सुप्रिया देती।

धृति के लिए
माही-जैक व सिल्क
सुखद साथी।

तोता व कुत्ते
झूला सोफ़े मैदान
बच्चों का मान।

पूरा जज्मेण्ट
अन्तर्बाह्य खुशियां
खोले ग्रन्थियां।

ताश सिखाती
एक साथ बिठाती
मेल कराती।

शादी के बाद
पहला अवसर
ताश खेल का।

याद आ गया
सतरंज खिलाड़ी
भान्जा विशेष।

बीकानेर में
तलघर आनन्द
विशेष संग।

इत्मीनान से
मनोयोगपूर्वक
सबके साथ।

चाय-बिस्किट
खेल के आनन्द को
दुगुना करे।



हर-जीत में
नाचता है श्रेयाँश
मस्ती बढाता।

सन्तान जीते
हर्षित माता-पिता
शाश्वत सत्य।

भोजनपूर्व
शौच-स्नान का क्रम
स्वस्थ बनाता।

जारी बारिश
टिप-टिप आनन्द
नदी किनारे।

झूला झूलते
मगन परस्पर
धृति-माही भी।

ऊपर-नीचे
चंचलता दिखाता
हर्षित माही।

बूगी-वूगी का
सेमी-फ़ाइनलिस्ट
डांसर माही।

दो-तीन बार
रिकॉर्ड पर नाचा
प्यारा सा माही।

भोजनपूर्व
गर्म टॉमेटो सूप
तृप्त करता।

रात्रि-भोजन
सहज ही छूटता
विदा-संदेश।



## चाय बागान आवास

किसी नए स्थान का आनन्द वहां एक रात बिताए बिना नहीं आंका जाता। नींद से जगने पर भोर-भोर का मन उस स्थान के साथ अपने सम्बन्ध के राज खोलता है।
रात्रि विश्राम मच्छरदानी की सुरक्षा और रजाई की नर्म गरमी में हुआ। प्रातः चार बजे बिस्तर छोड़कर नित्यकर्म से निवृत हुआ। आसन-प्राणायाम करने के लिए डरते -डरते कमरे का दरवाजा खोला। बजाय तीखी सर्द हवाओं के सुखद सुहानी बयार ने तन-मन पुलकाया।

चहचहाता
सरिता का किनारा
सुन्दर भोर।

शरीर-चर्या
आसन-प्राणायाम
हर्षित मन।

सात बजते
प्रातः की चाय मिली
प्रेमसहित।

नौ बजे तक
सह-नाश्ते का सुख
प्रसन्नमना।

चायबागान
विस्तीर्ण हरियाली
सीखा विज्ञान।



एकसाथ हैं
विज्ञान व दर्शन
प्रकृतिगत।

थका थकाया
क्लान्त रहा शरीर
विश्राम मांगे।

खाने के बाद
मसहरी सहित
भिन्न पलँग।

शीतल रात्रि
गरम रजाई में
चैन की नींद।

टंकी से पानी
रातभर बहता
शोर के साथ।

भौंकते कुत्ते
सुरक्षा अहसास
कराते खास।

लघु शंकार्थ
दो बार नींद टूटी
अभ्यास वश।

निर्जन वास
ज्यादा बैचेन करे
जन मन को।

अधिक दिन
यहाँ टिके रहना
सजा हो जाए।

दो चार दिन
परिवार के साथ
आनन्दावास।



करना क्या है?
खाओ घूमो सो
जाओ
बोर हो जाओ।

चाय की चिन्ता
बागानकर्मी करे
मेहमान क्यों?

लेखन कार्य
सब कामों के बीच
सार्थक होता।

माल बाजार
बिना बाजार माल
चाय बागान।

नदी किनारे
दो दिवसीय सुख
सुविधा सह

## सीखने का आनन्द

नाश्ते के बाद राजू के साथ चाय-बागान में सीखने के मनोभाव से उतरे। सुप्रिया और श्रेयाँश ने जिज्ञासाओं की झड़ी लगा दी, और साधक को अनायास चाय का पूरा चक्र समझ में उतरता गया। थोड़ी देर में सिखाने का जिम्मा मेनेजर चक्रवर्ती ने थाम लिया। लगभग 250 स्थायी मजदूरों को एक विस्तीर्ण भू-भाग पर प्रतिदिन सक्रिय रख लेना ही संगठन कौशल का प्रमाण है... ... यहाँ तो समय-सारणि भी चाय की पत्ती-पौधे तय करते हैं। कब उगाना-लगाना, कितने दिन कैसी देखभाल और कब पत्ती को तोड़ना... सब नैसर्गिक नियमानुसार है; बिल्कुल वैसे ही जैसे मानव शिशु का गर्भाधान से लेकर



शैशव, बचपन, कैशोर्य, यौवन अवस्था की अलग श्रेणी की समस्याओं को सम्भालना। एक पौधे की सामान्य उम्र भी 60-80 साल है। इनमें भी नर-मादा हैं; मादा में बांझपन की समस्या आम है, जो मानव देह तक आते-आते निसर्ग के प्रयोजन सहित अपवाद स्वरूप रह जाती है। पत्ती को तोड़ने का एक कालमान है; चाय की गुणवत्ता उसे मिली जल, वायु, दिशा, धूप और खगोलीय गतिविधियों पर आधारित है। महक का समीकरण भी उसके परिवेश और परवरिश पर निर्भर है।

नर-देह सा
विकास-क्रम जाना
चाय-पौधे का।

यहां-वहां है
नर-मादा संयोग
सन्तति हेतु।

बांझ-वृत्ति का
क्रमशः होता ह्रास
शुभ-संकेत।

बांझ इकाई
भिन्न श्रेणी की होती
दोनों तरफ।

मृत्यु पर्यन्त
मानव के समान
विकास-क्रम।



छः सात माह
सार-संभाल चाहे
गर्भकाल में।

शैशवावस्था
यौवन व वार्धक्य
जीता है पौधा।

जलवायु का
प्रभाव बतलाती
स्वाद-सौरभ।

पत्ती तोड़ना
समय सापेक्ष है
उपयोगार्थ।

खेत देख के
कारखाना आ गए
शिक्षा पूरी हो।

रोस्ट-रोलिंग
ड्राईंग व ग्रेडिंग
अन्त पैकिंग।

श्रम करते
जन मशीन संग
सुन्दर योग।

बीज से चाय
समझा पूरा चक्र
नया अध्याय।

ग्रीन-चाय के
अढाई लाख किलो
सौ हेक्टे'र में।

अस्सी सौ वर्ष
जीवित रहना है
चाय का पौधा!



मानव देह
और चाय पत्ती में
समानताएं।

नर-मादा की
अलग पहचान
करे हैरान।

वनस्पति से
मानव देह तक
जनन विधा।

प्रकृतिगत
समस्त रचनाएं
नियमाधीन।

बीमारी और
स्वास्थ्यलाभ हेतु
एक समान।

## सुख देता मित्रताभाव

शोधक-साधक की कृतज्ञता और बढा दी सबके मित्रभाव ने। शिशु माही ने तो आते ही यात्रा की सारी थकान अपनी मीठी मुस्कान से ही हर ली थी, उसके बाद तो रसोईया, परिचारक, सफ़ाई-कर्मी, काम वाली बाई और राजस्थान सीकर के राजू आदि सभी अपनी-अपनी स्नेहिल छाया देते रहे, कोई नई बात सिखाते रहे। माही ने अपने दोनों कुत्तों का स्वभाव शुरु से बताया। मादा सिल्क अपने साथी जैक से 2-3 माह छोटी है, बाद में लाई गई; और वही ज्यादा भौंकती है। जैक से किसी को कोई खतरा नहीं। एकदम सीधा-सादा है; शान्त रहता है। उससे यह पूछना भुला गया कि तोता अपने पिंजरे में अकेला



कैसे रहता है, उसके लिए किसी मैना की व्यवस्था क्यों नहीं की गई; शायद इसीलिए वह उदास लगा था साधक को।

फ़ेक्टरी पर चाय-निर्माण की पूरी प्रक्रिया देख-समझकर सब दो गाड़ियों में सवार हुए। विस्तीर्ण चाय-बागान दिखाने के साथ 20-22 किलोमीटर पर स्थित पिकनिक पॉईंट भी ले जाए गए। साधक इस अयाचित, अयोजित समय साध्य यात्रा के लिए तैयार नहीं था, नाराजगी के बावजूद वहाँ ले जाया गया तो साधक समझ गया कि श्रेयाँश-अमिता की योजना में यह शामिल था। स्वीकृति भाव बनाकर साधक ने इस पिकनिक का सुख लिया, वहीं एक आत्मीय अनुभूति भी पाई। भोजन का समय जानकर बच्चों के दुराग्रह

की उपेक्षा करके साधक आवास पर लौट आया, दस मिनट में सब बच्चे भी भुनभुनाते आ गए। भोजनोपरान्त विश्रामकाल में श्रेयाँश-अमिता फ़ॉरेस्ट सफ़ारी के लिए निकल पड़े। शाम की गाड़ी इस बेतरतीब मस्ती में छूट न जाए, इसकी चिन्ता ही साधक को रही, बाकी सारी व्यवस्था तो बच्चोंके हाथ है।



अशोक गर्ग
लघु चाय निर्माता
सुत से मित्र।

रुपेन्द्र-राजू
गोविन्द ड्राइवर
दैवीय जन।

पत्ती तोड़ना
रोमांचित करता
महिलाओं को।

उसी क्रम में
पिकनिक पॉईंट
जंगली खुशी।

पानी-पत्थर
शीतल होते पांव
कौन छोड़ेगा?

सुप्रिया-माही
धृति-अमिता सब
पानी में मस्त।

खूब फोटो ली
श्रेयाँश ने सबकी
सारे मस्त हैं।

एक्स्ट्रा इनिंग
अमिता-श्रेयाँश ने
दो-दो बार ली।

चाय बागान
फ़ॉरेस्टिंग ड्राईव
व मार्केटिंग।

पागलपन
अनुशासन तोड़े
बेपरवाह।



अस्वस्थ हुए
भोजन न विश्राम
भागमभाग।

सुना न जाए
बुजुर्गों के मुख से
हित की बात।

पदातिक से
सरकारी संगत
वापसी यात्रा।

देखा मानव
पशु-दानवी वृत्ति
स-प्रयोजन।

पूरी यात्रा में
अतुलित सौन्दर्य
स्मरणीय है।

मन से तन
सत्यं-शिवं-सुन्दरम्
दर्शन-लाभ।

सर्वांग स्वस्थ
चार दिन की यात्रा
घर वापसी।

घर लौटते
सुप्रिया की मोच का
ईलाज हुआ।

पिंजरा-बन्द
एक चिड़िया मरी
सब दुःखित।

अपना घर
सबसे सुखकर
पुनः साबित।



# परिशिष्ट
## सम्बन्धित कुण्डलियां

शुभ भावों से हो रहा यात्रा का प्रारम्भ।
परिवारीजन साथ हैं, नया एक प्रारम्भ।
नया एक प्रारम्भ बहू-बेटी-पत्नी संग।
बेटा कल आएगा पोती सदा मेरे संग।
अवसर पाता है साधक मंगल चाहों से।
यात्रा का आरम्भ हो रहा शुभ चाहों से।1

परिवेश को बदल लो, मन में हो बदलाव।
इक-रसता टूटे बने, सकारात्मक भाव।
सकारात्मक भाव चित्र बाहर का बदले।
अन्तर्मन सुधरे तो दृष्टि अपनी बदले।
साधक अब तो सम्भलो जाँचो मनोवेश को।
मन में हो बदलाव बदल लो परिवेश को।2

पाँच दिवस बाहर रहे, उत्सव सा आनन्द।
लौटे तो दुगुना लगे, निज घर का आनन्द।
निज घर का आनन्द, संभाला कोना-कोना।
इक चिड़िया मर गई, दुखी है दिल का कोना।
साधक का सौभाग्य फ़ैलता रैन-दिवस तक।
उत्सव सा आनन्द मनाया पाँच दिवस तक। 3